ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापको की शैक्षिक योग्यता की उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रभाव का अध्ययन

उर्मिला सिंह
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
महात्मा गॉधी चित्रकूट
ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट सतना, म0प्र0

सारांश

जैसा कि कहा जाता है– ''गुरू कुम्हार शिव कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि कोढे खोट, भीतर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट'' ठीक ऐसे ही अध्यापको की सोच व चिन्तन होना चाहिए और अपने व्यवयाय के प्रति कर्तव्य निष्ठा होकर कार्य करना एक शिक्षक का परम दायित्च है। जिसे बखूबी से जनपद बांदा के छः ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक निभा रहे है।

मुख्य शब्द : प्राथमिक विद्यालय, शैक्षिक योग्यता

प्रस्तावना

मानव इस जगत में अकेला ही जन्म लेता है और अकेला ही अन्तिम यात्रा की जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिए निकल जाता हैं। वह भौतिक जगत में काम आने वाली किसी भी वस्तुओ को न साथ लेकर आता है और न साथ लेकर जाता है। वास्तव में वह उस परमब्रह्म परमात्मा का ही एक अंश होता है जो उसी परमात्मा में विलन होने के लिए तैयारी करने के लिए इस भौतिक जगत में जन्म लेता है। इसमें शिक्षा का अपना विशेष महत्व है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसमें जन्म से ही सामूहिकता का गुण मूल प्रवृत्यात्मक रूप में प्राप्त होता है। प्रत्येक बालक कुछ जन्मजात शक्तियाँ लेकर इस संसार में पैदा होता है ये जन्मजात शक्तियां हर व्यक्ति में अलग–अलग प्रकार की होती है। ये शक्तियाँ खचियो, रूझानों, योग्यताओं एवं क्षमताओं आदि के रूप में होती है। इन्ही जन्मजात शक्तियों के आधार पर ही मानव शिक्षा के माध्यम से दिखाता है। अपने कार्य एवं व्यवयाय के प्रति सचेत रहता है। ताकि वे उपयुक्त ढंग से समाज में समायोजित होकर अच्छे नागरिक के रूप में जीवन यापन कर सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर शोधार्थिनी बांदा जनपद के छः ब्लाकों के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापको की व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता को एक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयाय किया गया हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

आज के इस वर्तमान युग में शिक्षा एक अनिवार्य विषय माना जा रहा है जिसमें 6 से 14 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई है। प्राथमिक शिक्षा जीवन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। यह बालक को केन्द्र बनाकर प्रदान की जाती है और इससे उसमें राष्ट्रीयता, स्वदेश–प्रेम एवं असम्प्रदायिक भावना पैदा होती है। बेसिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक–बालिकाओं को उपयुक्त शिक्षा प्रदान कर सेवा, सहिष्णुता, आत्मसंयम, स्नेह सहयोग और आम्मविश्वास जैसे गुणों को विकसित करने का पूरा–पूरा प्रयत्न किया जाता है। यहां अनेक प्रकार की रूढ़िवादिता व अंधविश्वास है जो कि धारणाएं प्रचलित है इन धारणाओं को समाप्त कर लोगो में शिक्षा के महत्व को बताना है शोधार्थिनी यह अभिकल्पित करती है कि प्राथमिक विद्यालय में विभिन्न शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षक शिक्षिकाएं कार्य करते है और उनकी इस योग्यता का उनके कार्य एवं व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ता है।

पारिभाषिक शब्दावली

शोध से प्रस्तुत समस्या का पारिभाषीकरण निम्नाकिंत है।

प्राथमिक विद्यालय

वह संख्या जिसमें छात्र छात्राओं को बेसिक शिक्षा दी जाती है।

कार्यरत अध्यापक

वे पुरूष एवं महिलाएं जो अर्थोपार्जन के लिए सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों में अध्यापक का कार्य करते है। तथा नियम व कानून का पालन करते है।

शैक्षिक योग्यता

शिक्षक की अपने अध्ययन काल के दौरान जो डिग्रीया हासिल क है।

व्यावसायिक प्रतिबद्धता

अपने कार्य को लयन, समर्पण एवं निष्ठापूर्वक करना व्यावसायिक प्रतिबद्धता हैं।

प्रतिबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोधार्थिनी ने बाँदा जिले के छः ब्लॉकों के छः सौ अध्यापकों (महिला, पुरूष) का चयन किया, जिसमें 400 सरकारी एवं निजी विद्यालय के अध्यापक लिये गये हैं। सरकारी विद्यालय के 300 पुरूष एवं 100 महिला अध्यापक हैं। तिन्दवारी ब्लॉक के 50 पुरूष अध्यापक और 16 महिला अध्यापक, बबेरू ब्लॉक के 50 पुरूष, 17 महिला अध्यापक, कमासिन ब्लॉक के 50 पुरुष, 17 महिला अध्यापक, बिसण्डा ब्लॉक के 50 पुरूष, 16 महिला अध्यापक, नरैनी ब्लॉक के 50 पुरूष, 17 महिला अध्यापक, बड़ोखर ब्लॉक के 50 पुरूष, 17 महिला अध्यापकों का चयन किया गया है।

कुल अध्यापक (600)

सरकारी विद्यालय — निजी विद्यालय

400 अध्यापक — 200 अध्यापक

300 पु0 अध्यापक — 100 म0 अध्यापक — 300 पु0 अध्यापक — 100 म0 अध्यापक

शैक्षिक योग्यता

सभी अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता के लिये उनके हाईस्कूल से लेकर उनकी अन्तिम डिग्री के कुल अँकों का अलग–अलग प्रतिशत निकालकर कुल डिग्रियों की सँख्या का भाग देकर जितना प्रतिशत आया, उस प्रतिशत को शैक्षिक योग्यता का आधार माना गया है।

व्यावसायिक प्रतिबद्धता

अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का मापन करने के लिये शोधार्थिनी सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पहुँचकर Dr. B. K. Passi एवं M. S. Lalita द्वारा निर्मित G.T.C.S.-P.B.L.M. की Consumable Booklet के आधार पर उनका पर्यवेक्षण किया गया और उनको मानक के आधार पर अँक प्रदान किये गये।

साँख्यिकीय प्रविधियाँ

साँख्यिकी प्रविधियों के अन्तर्गत मध्यमान मानक विचलन एवं 't' test का उपयोग किया गया है। शोधार्थिनी के द्वारा एकत्र किये गये आँकड़ों के उच्च शैक्षिक गुणाँक के 27 प्रतिशत के अध्यापकों एवं निम्न शैक्षिक गुणाँ वाले 27 प्रतिशत अध्यापकों को लिया गया है।

उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक

27% of 600 = 162 N = 162

वर्गान्तर	आवृत्ति (f)	मध्य बिन्दु (m)	विचलन (d)	f x d	f x d^2
56 – 63	2	59.5	-6	-12	72
53 – 70	7	66.5	-5	-3	175
70 – 77	8	73.5	-4	-32	128
77 – 84	18	80.5	-3	-54	162
84 – 91	24	87.5	-2	-48	96
91 – 98	30	94.5	-1	-30	30
98 – 105	40	101.5	0	0	0
105 – 112	21	108.5	+1	+21	21
112 – 119	8	115.5	+2	+16	32
119 – 126	4	122.5	+3	+12	86
	N = 162			Σfd=-162	Σfd^2=752

AM = 101.5, N=162, C.I.=8

$$M = A.M. + \frac{\sum fd}{N} x C.I.$$

$$= 101.5 + \left(\frac{-162}{162}\right) x 8$$

= 101.5 – 8

M = 93.5

$$S.D. = C.I.\ x \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

$$= 8\ x \sqrt{\frac{752}{162} - \left(\frac{162}{162}\right)^2}$$

$$= 8\ x \sqrt{3.53 - 1}$$

$$= 8\ x \sqrt{2.53}$$

$$= 8\ x\ 1.59$$

$$S.D. = 12.72$$

वर्गान्तर	आवृत्ति (f)	मध्य बिन्दु (m)	विचलन (d)	f x d		f x d²
57 – 64	3	60.5	-5	-15		75
64 – 71	7	67.5	-4	-28		119
71 – 78	12	74.5	-3	-36	-142	108
78 – 85	21	81.5	-2	-42		84
85 – 92	21	88.5	-1	-21		21
92 – 99	43	95.5	0	0		0
99 – 106	36	102.5	+1	+36		36
106 – 113	15	109.5	+2	+30		60
113 – 119	3	116.5	+3	+9	+79	27
119 – 126	1	122.5	+4	+4		16
	N = 162			Σfd=-63		Σfd^2=546

AM = 95.5, N=162, C.I.=8

$$M = AM + \frac{\sum fd}{N} x C.I.$$

$$= 95.5 + \left(\frac{-63}{162}\right) x 8$$

= 95.50 – 3.11

M = 92.39

$$S.D. = C.I.\ x \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

$$= 8\ x \sqrt{\frac{546}{162} - \left(\frac{-63}{162}\right)^2}$$

$$= 8\ x \sqrt{3.37 - 0.15}$$

$$= 8\ x \sqrt{3.22}$$

$$= 8\ x\ 1.79$$

$$S.D. = 14.32$$

't' test

समूह	सँख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	C.R.
उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक	162	93.50	12.72	0.76
निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक	162	92.39	14.32	

$$\sigma D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \sqrt{\frac{(12.72)^2}{162} + \frac{(14.32)^2}{162}}$$

$$= \sqrt{0.998 + 1.266}$$

$$= \sqrt{2.254}$$

$$\sigma D = 1.50$$

$$C.R. = \frac{M_1 - M_2}{\sigma D} = \frac{93.50 - 92.34}{1.50}$$

$$C.R. = 0.76$$

$$df = N_1 + N_2 - 2$$

$$df = 162 + 162 - 2 = 322$$

5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक 't' का मान – 1.97

1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक 't' का मान – 2.59

यहाँ प्राप्त 0.76 't' का मान सार्थक नहीं है, क्योंकि यह उपरोक्त दोनों मानों से कम है। अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना को स्वीकृत किया है और यहाँ यही मानना पड़ेगा कि दोनो समूह के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

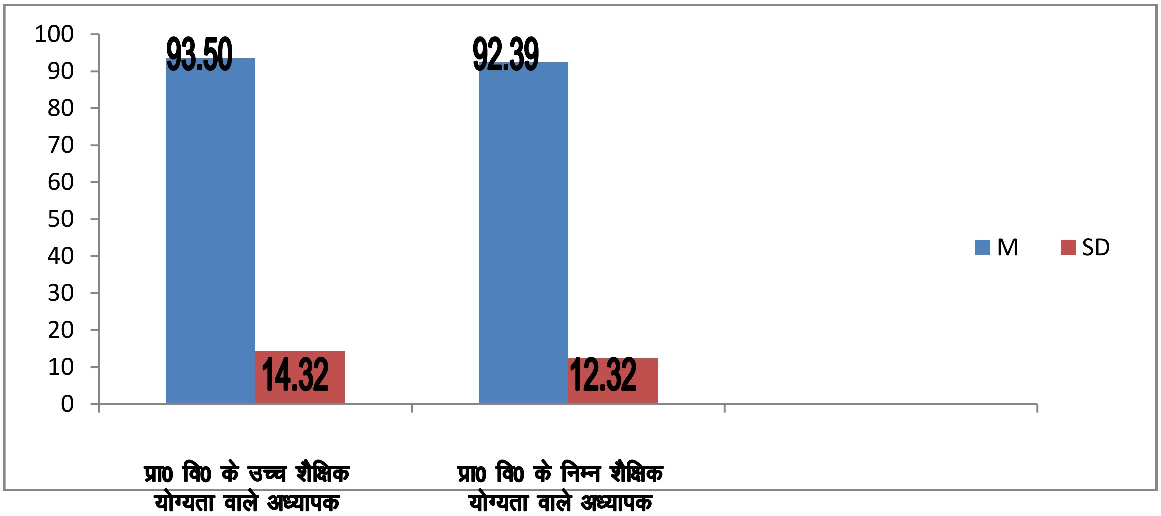

सारणी से स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 39.50 है तथा मानक विचलन 12.72 है। निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 92.39 है तथा मानक विचलन 14.32 है। 't' test लगाने पर दोनो माध्यों का C.R.-0.76 आया है, जो कि 322 fd पर 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. ('t') का मान 1.97 है तथा 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. ('t') का मान 2.59 से बहुत कम है, जो कि सार्थक नहीं है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और यह मानना पड़ेगा कि दोनो समूहों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता के माध्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शैक्षिक योग्यता का उनके व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष

शिक्षक ज्ञान का स्त्रोत नही वरन् एक ऐसा सुगतकर्ता है जो सूचना को अर्थ/बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों के द्वारा बच्चे के लिए सहायक है प्राथमिक शिक्षा बच्चे अपनी मां से ही प्राप्त करता है। बच्चे में पढ़ने लिखने बोलने और सुनने की क्षमता जन्मजात होती है प्राथमिक शिक्षा द्वारा बालक का मार्ग प्रशस्त होता है बालक समाज में एक अच्छे नागरिक के रूप में अपने आप को समायोजित कर सके आदि में शिक्षक तन मन व समर्पण के साथ निष्ठापूर्वक अपने व्यवसाय के प्रति सचेष्ट रहता है।

अतः बालक के सर्वागीण विकास हेतु ऐसी शिक्षा व्यवस्था को क्रियान्वयन करने से है जिससे बालक अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सके साथ ही शिक्षा के उद्देश्य को भी पूर्ण किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय शिक्षा का विकास, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद, लेखक– डॉ0 मालती सारस्वत, प्रो0 एस0एल0 गौतम*
2. *उभरते भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, लेखक– डॉ रामशकल पाण्डेय।*
3. *वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, लेखक– नम्रता वशिष्ट, रामप्रकाश शर्मा*
4. *प्रगतिशील/उदीयमान भारत में शिक्षा राधा प्रकाशन मंदिर आगरा, लेखिका– श्रीमती राजकुमारी शर्मा*
5. *अधिगम का विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2, लेखक– डॉ0 रामपाल सिंह, डॉ0 राधावल्लभ उपाध्याय*
6. *मनोविज्ञान समाज शास्त्र में शिक्षा में शोध विधियॉं, प्रकाशन– मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – लेखक– अरूण कुमार सिंह*
7. *वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा0लि0 आगरा, लेखक– श्रीमती आर0के0 शर्मा, प्रो0 श्रीकृष्ण दुबे, श्रीमती अनीता बरौलिया*
8. *विकासोन्मुख भारीयत समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, लेखक–गुरसदन दास त्यागी।*
9. *भारतीय शिक्षा और उनकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, लेखक–पी0डी0पाठक*
10. *भारतीय शिक्षा में समसामयिक प्रकरण, शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद, लेखक – प्रो0 एस0 पी0 गुप्ता, डॉ0 अल्का गुप्ता*
11. *शिक्षा की दार्पूनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी जयपुर, लेखक डा0 लक्ष्मी के ओड़*
12. *शिक्षा के दार्पूनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ रस्तोगी पब्लिकेशन, लेखक– रमन बिहारी लाल*
13. *समृद्ध शिक्षा अभियान–राज्य परियोजना निदेशक, लखनऊ, लेखक– जे एस दीपक, आई0ए0एस0*
14. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, लेखक– रामशकल पाण्डेय*